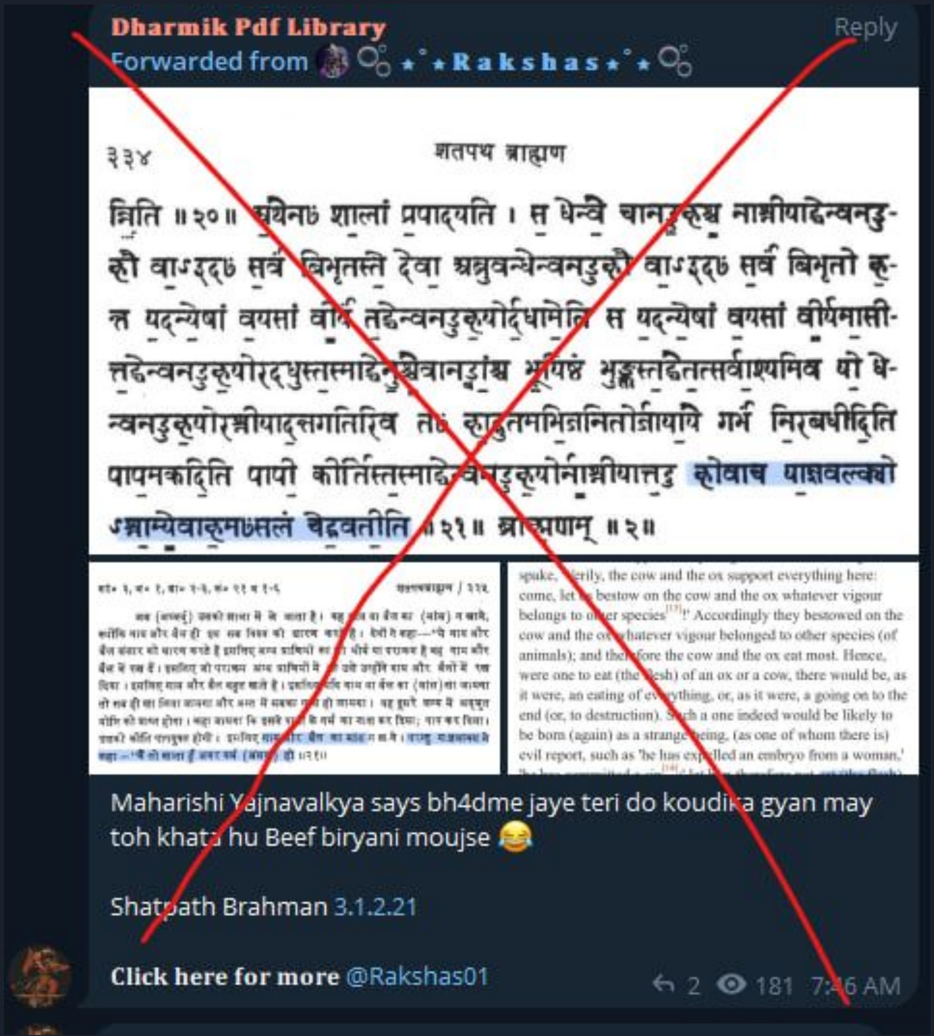

Did Rishi Yajnavalkya ate beef ?
Mystical Garuda

प्रकरण :- शतपथ ब्राह्मण 3/1/2/21

कुछ मूढ़मतियों का दावा है कि सोमयागनिरूपण के प्रकरण में महर्षि याज्ञवल्क्य के द्वारा धेनु (गौ) व अनड्वान् (बैल) के अंसल (तथाकथित = नर्म गोमांस) खाने की बात आई है ।

हम आज उसी की समीक्षा करने वाले हैं । आइए जानते हैं इन लोगों को कितना व्याकरण और शास्त्र का ज्ञान है ?



यममुमदीक्षितोऽथात्र भद्रं तस्मादाह भद्रं वर्णं पुष्यन्निति ॥२०॥

अथैनथ्ंश् शालां प्रपादयति । स धेन्वै चानडुहश्च नाश्नीयाद्धेन्वनडुहौ वाऽइदथ्ंश् सर्वं बिभृतस्ते देवा अब्रुवन्धेन्वनडुहौ वाऽइदथ्ंश् सर्वं बिभृतो हन्त यदन्येषां वयसां वीर्यं तद्धेन्वनडुहयोर्दधामेति स यदन्येषां वयसां वीर्यमासीत्तद्धेन्वनडुहयोरदधुस्तस्माद्धेनुश्चै-

वानड्वांश्च भूयिष्ठं भुङ्क्तस्तद्धैतत्सर्वाश्यमिव यो धेन्वनडुहयोरश्नीयादन्तगतिरिव तथ्ंश् हाद्भुतमभिजनितोर्जायायै गर्भं निरवधीदिति पापमकदिति पापी कीर्तिस्तस्माद्धेन्वनडुहयोर्ना-श्नीयात्तदु होवाच याज्ञवल्क्योऽश्नाम्येवाहमथ्ंश्सलं चेद्भवतीति ॥२१॥ ब्राह्मणम् ॥२॥

प्रकरण कुछ इस प्रकार है :-

जब यजमान स्नान कर वस्त्रादि धारण कर लेता है , तब अध्वर्यु उसे यज्ञशाला में ले जाता है । तत्पश्चात यजमान यज्ञदीक्षा की पूर्ति होने तक उपवास करता है तथा धेन्वादि पशुओं से उत्पन्न पदार्थ का सेवन भी नहीं करता । तब याज्ञवल्क्यजी कहते हैं कि मैं (पुरोहित) तो इन बलवर्धक / पुष्टिकारक पदार्थों (धेन्वादि से उत्पन्न पदार्थ) को खा ही सकता हूं ।

सायणाचार्य कृत अर्थ :-

प्रसञ्जयति—**पापं वा एषं इति** ॥ २० ॥

अथ क्षौरानन्तरं स्नातस्य भृतवाससः शालाप्रवेशं विधत्ते—**अथैनमिति** । 'प्रपादयति' गमयेदध्वर्युः(का. श्रौ.सू.७।७१)।अस्याभ्यशनकालत्वादत्राशने कञ्चिन्नियममाह—**स धेन्वै वे**ति। धेनोः क्षीरादिकम्, अनडुहः सम्बन्धि कर्षणसाध्यमित्यर्थः । तदुभयं 'नाश्नीयात्' धेन्वनडुहयोः सर्वजगदुपकारकत्वात् तदीयांशनप्रतिषेध इत्यर्थः । एतदेवोपपादयति—**ते देवा** इत्यादिना । अनयोः सर्वोपकारकत्वं विज्ञाय देवैः'वयसाम्' 'अन्येषां'च पशूनां 'वीर्यं,

१—'वाग्यतं प्रवेशयत्याहवनीयगार्हपत्यावन्तरेण' इति ।

अभी उन महानुभावों का यही उत्तर आने वाला है कि इसका अर्थ तो तुमने खुद से ही कुछ भी लगा दिया । उन्हें मैं स्पष्ट कर दूं कि यह अर्थ मेरा नहीं , अपितु चतुर्वेदी भाष्याकार आचार्य सायण का है ।

सायणाचार्य ने " धेनोः क्षीरादिकम् " से गौ के दुग्धादि उत्पाद तथा " अनडुहःसम्बन्धि कर्षणसाध्यमित्यर्थ " से बैलों की सहायता से कृषि द्वारा उत्पन्न पदार्थों का ही अर्थ ग्रहण किया है ।

आइए अब आपको कंडिका में वर्णित अंसल (तथाकथित नर्म) का अर्थ समझाते हैं ।

अंसल का वास्तविक अर्थ :-

अंस धातु में लच् प्रत्यय जोड़ने पर अंसल शब्द की निष्पत्ति होती है ।

यह काम और बल के अर्थों में सिद्ध होता है ।

पाणिनीय अष्टाध्यायी 5/2/98

वत्सांसाभ्यां कामबले 5.2.98

पद.—वत्सांसाभ्याम् 5.2 कामबले 7.1

अनु.—तदस्यास्त्यस्मिन्निति लच् ।

अर्थ—मत्वर्थ में प्रथमासमर्थ वत्स तथा अंस प्रातिपदिकों से यथासंख्य करके काम और बल अर्थों में लच् होता है ।

उदा.—वत्स लच्–वत्सलः ।

अंस लच्–अंसलः ।

वत्सांसाभ्यां कामबले ॥ ६८ ॥

वत्सांसशब्दाभ्यां लच् प्रत्ययो भवति यथासंख्यं कामवति बलवति चार्थे। वत्सलः।

१ - 'तेषामत्र' इति है० । २ - 'शोभायोग्यता' इति बाल० ।

अंसलः। वृत्तिविषये वत्सांसशब्दौ स्वभावात् कामबलयोर्वर्तमानौ तद्वति प्रत्ययमुत्पादयतः। न ह्यत्र वत्सार्थोऽसार्थो वा विद्यते। वत्सल इति स्नेहवानुच्यते—वत्सलः स्वामी, वत्सलः पितेति। अंसल इति चोपचितमांसो बलवानुच्यते। न चायमर्थो मतुपि संभवतीति नित्यं लजेव भवति। अन्यत्र वत्सवती गौः। अंसवान् दुर्बलः॥

पाणिनीय अष्टाध्यायी की काशिका वृत्ति में भी इसकी व्याख्या कुछ इस प्रकार है :-

" अंसल इति चोपचितमांसो बलवानुच्यते " अर्थात् अंसल शब्द बलवान या मांसल का सूचक होता है । इसी प्रकार अंसवान दुर्बल का सूचक होता है ।

अंसल का वास्तविक अर्थ :-

५ जघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोऽवरजानुजाः ॥ ४३ ॥
६ अमांसो [2]दुर्बलश्छातो ७ बलवान्मांसलोऽसलः ।
८ [3]तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचण्डिलः ॥ ४४ ॥

६ अमांसः, दुर्बलः, छातः (= शातः । ३ त्रि), 'दुर्बल, कमजोर' के ३ नाम हैं ॥

७ बलवान् (= बलवत्), मांसलः, अंसलः (३ त्रि), 'बलवान्, मजबूत या मोटे' के ३ नाम हैं ॥

नामलिंगानुशासनम् (अमरकोश) 2/6/44 के अनुसार :- " बलवान्मांसलोऽसलः " अर्थात् अंसल का अर्थ मोटा , मांसल या बलवान होता है ।

जाहिर सी बात है अगर यहां पर मांस की बात आती , तो इस मांसल/बलवान कहने की जरूरत नहीं पड़ती । कंडिका में सीधा मांस लिखना ही पर्याप्त था । वैसे भी अंसल शब्द यहां कहीं पर भी नर्म गोमांस के परिपेक्ष में प्रयोग नहीं हुआ , जैसा पूर्वपक्ष का दावा था ।

आइए , सायणाचार्य के भाष्य द्वारा इसका प्रकरणानुसार अर्थ समझते हैं ।

अंसल का वास्तविक अर्थ :-

साऽमादाय धेन्वनडुहयोः स्थापितत्वात् तदश्नतः सर्वाशनं भवति । तस्य च जायायाः गर्भसम्भवे सति तत् सर्वाशनं तं रेतोरूपेण परिणतं 'गर्भं' हिंस्यात् । तत् पापकीर्तिः स्यात्[1] तदुभयोरन्नं 'नाश्नीयात्' । तत्र याज्ञवल्क्यपक्षमाह—तद्दु होवाचेति । चेदिति यस्मादर्थे । यस्मादुभयाशने शरीरम् 'अंसलं भवति' । तस्मात् 'अश्नाम्यहं' तयोरन्नमश्नीयामेवेत्यर्थः । एकहायनप्रभृत्यापञ्चहायना गावो वयांसि; तथैवापस्तम्बेनाभिधानात् । अत्र कात्यायनः— "धेन्वनडुहयोर्नाश्नीयात्, पुरुषधर्मो वा सम्भवात्, अंसलभोजनं वा" का. श्रौ. सू. ७।९१–९३–इति ॥ २१ ॥

इति श्रीसायणाचार्यविरचिते माधवीये वेदार्थप्रकाशे माध्यन्दिनशतपथब्राह्मणभाष्ये तृतीयकाण्डे प्रथमाध्याये द्वितीयं ब्राह्मणम् ॥ (३–१–२) ॥

आचार्य सायण लिखते हैं :-

" यस्मादुभयाशने शरीरम् अंसलं भवति " अर्थात् जिन दोनों खाद्यान्नों को ग्रहण करने से शरीर अंसल हो जाए , या मांसल/बलवान हो जाए ।

चूंकि सायणाचार्य पहले ही प्रकरणानुसार धेनु व अनड्वान् का अर्थ स्पष्ट कर चुके हैं , तो उन्हीं को ग्रहण करने की बात आ रही है । जाहिर सी बात है , दुग्ध तथा कृष्योत्पदित अन्न में यह सभी गुण पाए जाते हैं ।

कात्यायन श्रौतसूत्र का समर्थन :-

धेन्वनडुहयोर्नाश्नीयात् ॥ २२ ॥

धेन्वनडुन्मांसं नाशितव्यम् । 'स धेन्वै चानडुहश्च नाश्नीयात्' इति वचनात् ॥२२॥

क्रतुमध्ये समाम्नानात् क्रतुधर्मोऽयमिति प्राप्तं आह—

पुरुषधर्मो वाऽसम्भवात् ॥ २३ ॥

पुरुषधर्म एवायं क्रतावसम्भवात् । प्राप्तिपूर्वको हि प्रतिषेधो भवति, न चेह प्राप्तिरस्ति । कथम् ? येन दीक्षितस्य पयोव्रतता विहिता, निवृत्ते च पयसि हविश्शेषभक्षतोक्ता । अतः प्रतिषेधस्यासम्भवात् पुरुषधर्म एवायमिति सम्प्रदायः । इष्टाशनविषयोऽयं प्रतिषेध इत्यपरे, तथा च प्रकरणस्याबाध इति ॥ २३ ॥

कात्यायन श्रौतसूत्र 7/2/22-23 में भी मांसाहार खंडन देखने को मिलता है ।
श्रौतसूत्र में वर्णित इस प्रसंग की व्याख्या करते हुए पूर्वाचार्य कर्क अपने भाष्य में लिखते हैं :-

" धेन्वनडुन्मांसं नाशितव्यम् । येन दीक्षितस्य पयोव्रतता विहिता , निवृत्ते च पयसि हविश्शेषभक्षतोक्ता । "

अर्थात् यहां पर वास्तविक गौ-बैल के मांस का प्रयोग निषेध है (गाय-बैल का मांस नहीं खाएगा) , दीक्षित को चाहिए कि पयोव्रत धारण करें अर्थात् दूध का सेवन करें तथा दीक्षा पूरी हो जाने के बाद शेष बची हवि का भोजन करें ।

वैदिक वाङ्मय में गाय और बैल का महत्व :-

अघ्न्या ॥ ३१ ॥

अघ्न्याऽहन्तव्या भवति ॥ २ ॥

"अघ्न्या (३१)–"कस्मात् ? सा हि सर्वस्यैव "अहन्तव्या भवति" ॥ ११ । ४३ । २

अघघ्नीति वा ॥ ३ ॥ ४३ ॥

"अघघ्नीति वा" सा हि पाप हन्ति ॥ ११ । ४३ । ३ ॥

निरुक्त 11/43 में गौ को अघन्या कहा है। इसकी व्याख्या करते हुए दुर्गवृत्ति कहती है, वो जिसकी हिंसा सभी के द्वारा , सदा ही निषेधित है ।

यजुर्वेद में यही अघ्न्य शब्द वृषभ के लिए भी प्रयोग में लाया गया है , जो मैं आगे दिखाता हूं ।

वैदिक वाङ्मय में गाय और बैल का महत्व :-

[वि । मुञ्चध्वम् । अघ्न्याः । देवयानाऽइतिदेव यानाः । अगन्म । तमसः । पारम् । अस्य ॥ ज्योतिः । आपाम ॥७३॥]

(हल से बैलों को छोड़कर उन्हें चरने के लिए ईशानदिशा में छोड़ देवे। सुत्या के दिन पुनः सब बैलों को मय हल-नसी अध्वर्यु को दक्षिणा रूप में प्रदान कर देवे।) हे देवयानमार्ग का अनुसरण करने वालो! हे अहिंसनीय बैलों! अब तुम स्वयं को हल से मुक्त करो (=जगत् की स्थिति मुख्य हेतुभूता कृषि को सम्पन्न करके अब विश्राम करो)। हम इस भूख-प्यास रूप प्रगाढान्धकार के पार लग गए। हमें शान्ति और वह परमात्म परम ज्योति प्राप्त हो गई ॥ ७३ ॥

यजुर्वेद 12/73 में बैल जाति के लिए अघन्या जैसे शब्द प्रयोग किए गए हैं, अर्थात जिनकी हिंसा का सर्वकालिक निषेध है। ऐसे में किसी भी वृषभ को मार कर देवता को संतुष्ट करना, कहां से तर्क संगत है?

उ० अनडुहो विमुञ्चति। विमुच्यध्वम् । गायत्री । एवं जगतः स्थितिनिमित्तभूतां कृषिमभिनिर्वर्त्य कृतकृत्याः सन्तो विमुच्यध्वं युगात्। हे अघ्न्याः अहन्तव्याः । देवयानाः देवकर्मकारिणः । यद्वा देवयानमार्गनिमित्तभूता

आचार्य उव्वट ने भी इसका अर्थ यही किया है, कभी ना मारने योग्य।

देवयानाः, देवतार्थकर्मकारिणः, देवार्थं यानं कृष्याद्युद्यमो येषां ते । यद्वा देवयानमार्गहेतुभूताः कर्मद्वारा तत्प्रापकाः । हे अघ्न्या अहन्तव्या गावो बलीवर्दाः, यूयं विमुच्यध्वम् । मुचेः कर्मकर्तरि यक् लोटि । जगत्स्थितिहेतुं कृषिमेवं निष्पाद्य कृतकृत्याः सन्तो युगात्पृथग्भवतेत्यर्थः । अस्य तमसः क्षुत्पि-

आचार्य महीधर तो एक कदम और आगे बढ़ गए, और उन्होंने समस्त गोजाति को ही अघन्या कह दिया।

अघ्न्या इति गवां नाम क एता हन्तुमर्हति ।
महच्चकाराकुशलं वृषं गां वाऽऽलभेत् तु यः ॥ ४७ ॥

श्रुतिमें गौओंको अघ्न्या (अवध्य) कहा गया है, फिर कौन उन्हें मारनेका विचार करेगा ? जो पुरुष गाय और बैलोंको मारता है, वह महान् पाप करता है ॥ ४७ ॥

महाभारत शांति पर्व 263 के अनुसार गौ और वृषभ की हत्या करने वाला महापापी होता है। तुलाधार कहते हैं कि गौ को वेद द्वारा अघन्या शब्द से सम्बोधित किया गया है तो उसकी हत्या कैसे की जा सकती है ??

इसके अलावा उसी अध्याय के आख्यान अनुसार राजा नहुष के गौ और वृषभ की हत्या किये जाने पर उनको भ्रूणहत्या का महापाप लगा था। इसके अलावा ऋषियों ने व्यथित होकर उनका यज्ञानुष्ठान भी नहीं करवाया था। अतः गौ और वृषभ दोनों की हिंसा शास्त्र सम्मत नहीं है।

ऋषयो यतयो ह्येतन्नहुषे प्रत्यवेदयन् ।
गां मातरं चाप्यवधीर्वृषभं च प्रजापतिम् ॥ ४८ ॥
अकार्यं नहुषाकार्षीर्लप्स्यामस्त्वत्कृते व्यथाम् ।
शतं चैकं च रोगाणां सर्वभूतेष्वपातयन् ॥ ४९ ॥
ऋषयस्ते महाभागाः प्रजास्वेव हि जाजले ।
भ्रूणहं नहुषं त्वाहुर्न ते होष्यामहे हविः ॥ ५० ॥

एक समयकी बात है, ऋषियों और यतियोंने राजा नहुषके पास जाकर निवेदन किया कि तुमने माता गौ और प्रजापति वृषभका वध किया है, नहुष ! यह तुम्हारे द्वारा न करनेयोग्य पापकर्म किया गया है, तुम्हारे इस कुकृत्यके कारण हम सब लोगोंको बड़ी व्यथा हो रही है। जाजले ! ऐसा कहकर नहुषके द्वारा प्रशंसित उन महाभाग ऋषियोंने पापको एक सौ एक रोगोंके रूपमें परिणत करके समस्त प्राणियोंपर डाल दिया, राजा नहुषको भ्रूणहत्यारा बताया और स्पष्ट कह दिया कि हमलोग तुम्हारे यज्ञमें हविष्यकी आहुति नहीं देंगे॥

उणादिसूत्र (४/११३) में गाय को "अघन्या" विशेषण दिया गया है यह शब्द वेदों में भी कई मंत्रों में गाय के लिए आया है जिसका व्याकरण परक अर्थ होते हैं " यो न हन्यते अघ्न्यः " अर्थात् जो हिंसा / वध का योग्य नहीं है।

(556) अघ्न्यादयश्च [4.113]

पद०—अघ्न्यादय: 1.3, च—अव्य० ।

सं०—अघ्न्यादयश्शब्दा यक्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

व्याख्या—अघ्न्यादि यक्प्रत्ययान्त शब्द निपातन से सिद्ध हैं । यक् प्रत्यय कित् है । कित्करण उपधालोप, घकारादेश आदि कार्यों के लिए है ।

स्वा०द०वृ०—यगन्ता निपाता: । यो न हन्यते न हन्तीति वा स **अघ्न्य:**, प्रजापालको वा, 'अघ्न्या' गौर्वा । धातोरुपधालोपो हस्य घत्वं च । सन्दधाति यस्यां वेलायां सा **सन्ध्या**, सायङ्काल: प्रतिज्ञा वा । आतो लोप: । सम्यग् ध्यायन्ति परं ब्रह्म यस्यां सा **सन्ध्या**, इति तु **स्त्रियां क्तिन्** [अ० 3.3.94] इत्यधिकारे **आतश्चोपसर्गे** [3.3.106] इत्यङ् । कन्यते दीप्यते काम्यते गच्छति वा सा **कन्या,** कुमारी वा ।

उदा०—(1) अघ्न्य: (= प्रजापालक, गाय)—यो न हन्यते । न हन्ति । नञ् हन हिंसागत्यो: से यक्—अ हन् य—'नलोपो नञ:' (पा० 6.3.73) से नलोप । निपातन से धातु की उपधा का लोप तथा हकार को घकार—अ ह् न् य—अघ्न्य— सु । 'हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु' (पा० 7.3.54) से घकार आदेश होता है—अघ्न्य सु— विभक्तिकार्य ।

वैदिक वाङ्मय में गाय और बैल का महत्व :-

४६६८. न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति ।
देवाँश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह ॥३ ॥

वे गौएँ नष्ट नहीं होतीं, तस्कर उन्हें हानि नहीं पहुँचा पाते । शत्रु के अस्त्र उन गौओं को क्षति नहीं पहुँचा पाते । गौओं के पालक जिन गौओं से देवों का यजन करते हैं, उन्हीं गौओं के साथ चिरकाल तक सुखी रहें ॥३ ॥

४६६९.न ता अर्वा रेणुककाटो अश्नुते न संस्कृतत्रमुप यन्ति ता अभि ।
उरुगायमभयं तस्य ता अनु गावो मर्तस्य वि चरन्ति यज्वनः ॥४ ॥

रेणुका (धूल) उड़ाने वाले द्रुतगामी अश्व भी उन गौओं को नहीं पा सकेंगे । इन गौओं पर वध करने के लिए आघात न करें । याजक की वे गौएँ विस्तृत क्षेत्र में निर्भय होकर विचरण करें ॥ ४ ॥

ऋग्वेद 6/28/3-4

गौ के साथ किसी भी तरह की हिंसा नहीं होनी चाहिए, यही मंत्रों का सार है।

इसके अलावा जिन गौओं से देवो की आराधना होती है, वो गौए अपने स्वामी के साथ चिरकाल तक सुखी रहें।

अब एक बात सोचिए, अगर गोजाति की बलि दी जाती, तो वो अपने स्वामी के साथ लंबे समय तक सुखी कैसे रह सकती है?

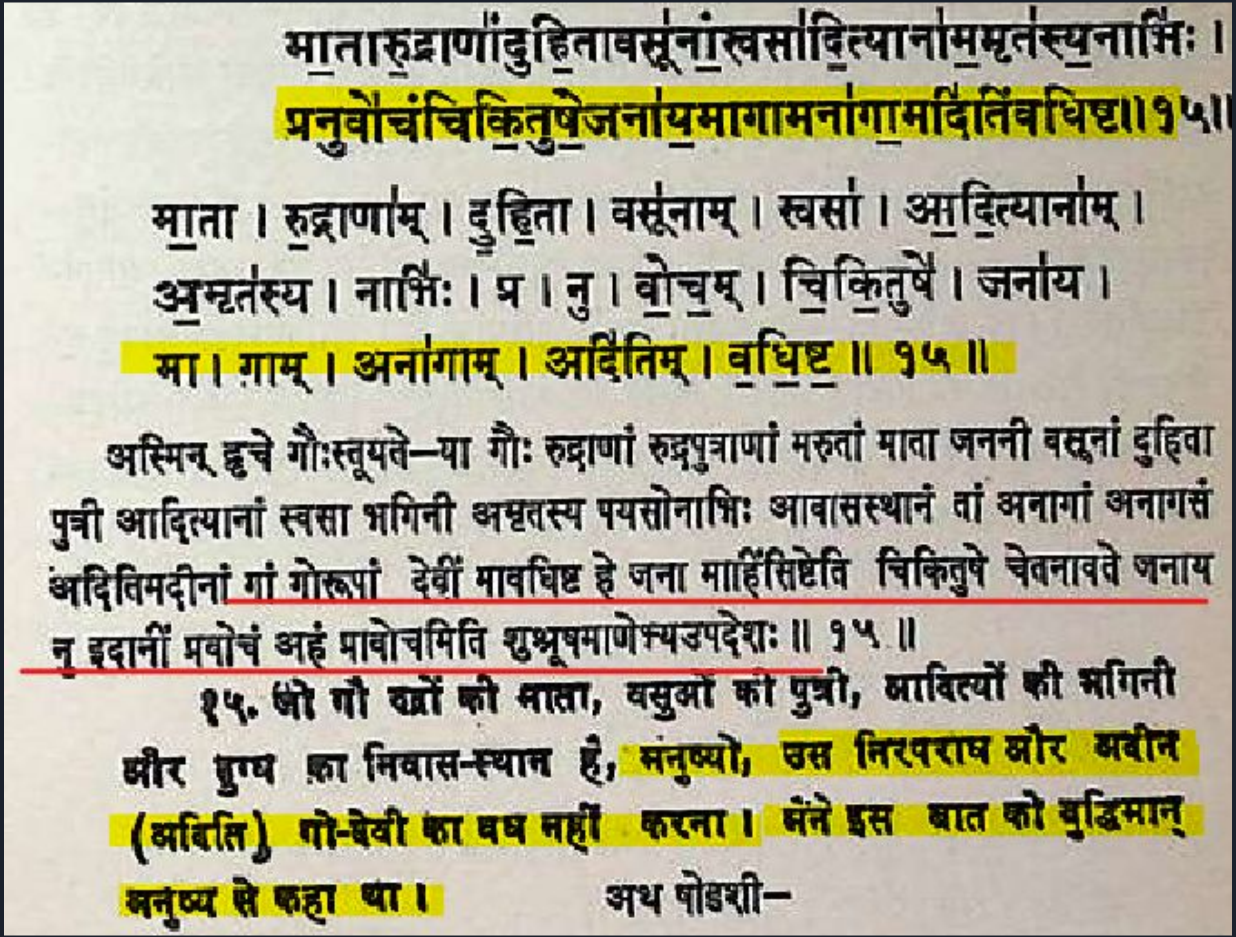
वैदिक वाङ्मय में गाय और बैल का महत्व :-

ऋग्वेद में गौमाता की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए उसे अखंडनीया अदिति , मेरा अपराध तथा रक्षणीय माना गया है ।

वेदभगवान् ने स्वयं गौहत्या का निषेध किया है (मा गामनागामदितिं वधिष्ट)
तथा
श्रुति का निषेध, सर्वकालिक ही है ।

ऋग्वेद 8/101/15

भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात् प्रसिध्यति ~ मनुस्मृति 12/97



मातारुद्राणांदुहितावसूनांस्वसादित्यानाममृतस्यनाभिः ।
प्रनुवोचंचिकितुषेजनायमागामनागामदितिंवधिष्ट॥१५॥

माता । रुद्राणाम् । दुहिता । वसूनाम् । स्वसा । आदित्यानाम् ।
अमृतस्य । नाभिः । प्र । नु । वोचम् । चिकितुषे । जनाय ।
मा । गाम् । अनागाम् । अदितिम् । वधिष्ट ॥ १५ ॥

अस्मिन् तृचे गौःस्तूयते—या गौः रुद्राणां रुद्रपुत्राणां मरुतां माता जननी वसूनां दुहिता पुत्री आदित्यानां स्वसा भगिनी अमृतस्य पयसोनाभिः आवासस्थानं तां अनागां अनागसं अदितिमदीनां गां गोरूपां देवीं मावधिष्ट हे जना माहिंसिष्टेति चिकितुषे चेतनावते जनाय नु इदानीं प्रवोचं अहं प्रावोचमिति शुश्रूषमाणेभ्यउपदेशः ॥ १५ ॥

१५. जो गौ रुद्रों की माता, वसुओं की पुत्री, आदित्यों की भगिनी और दुग्ध का निवास-स्थान है, मनुष्यो, उस निरपराध और अदीन (अदिति) गो-देवी का वध नहीं करना । मैंने इस बात को बुद्धिमान् मनुष्य से कहा था । अथ षोडशी—

निष्कर्ष :-

अतः उपर्युक्त शास्त्रप्रमाणों देखते हुए यही निष्कर्ष निकलता है कि :-

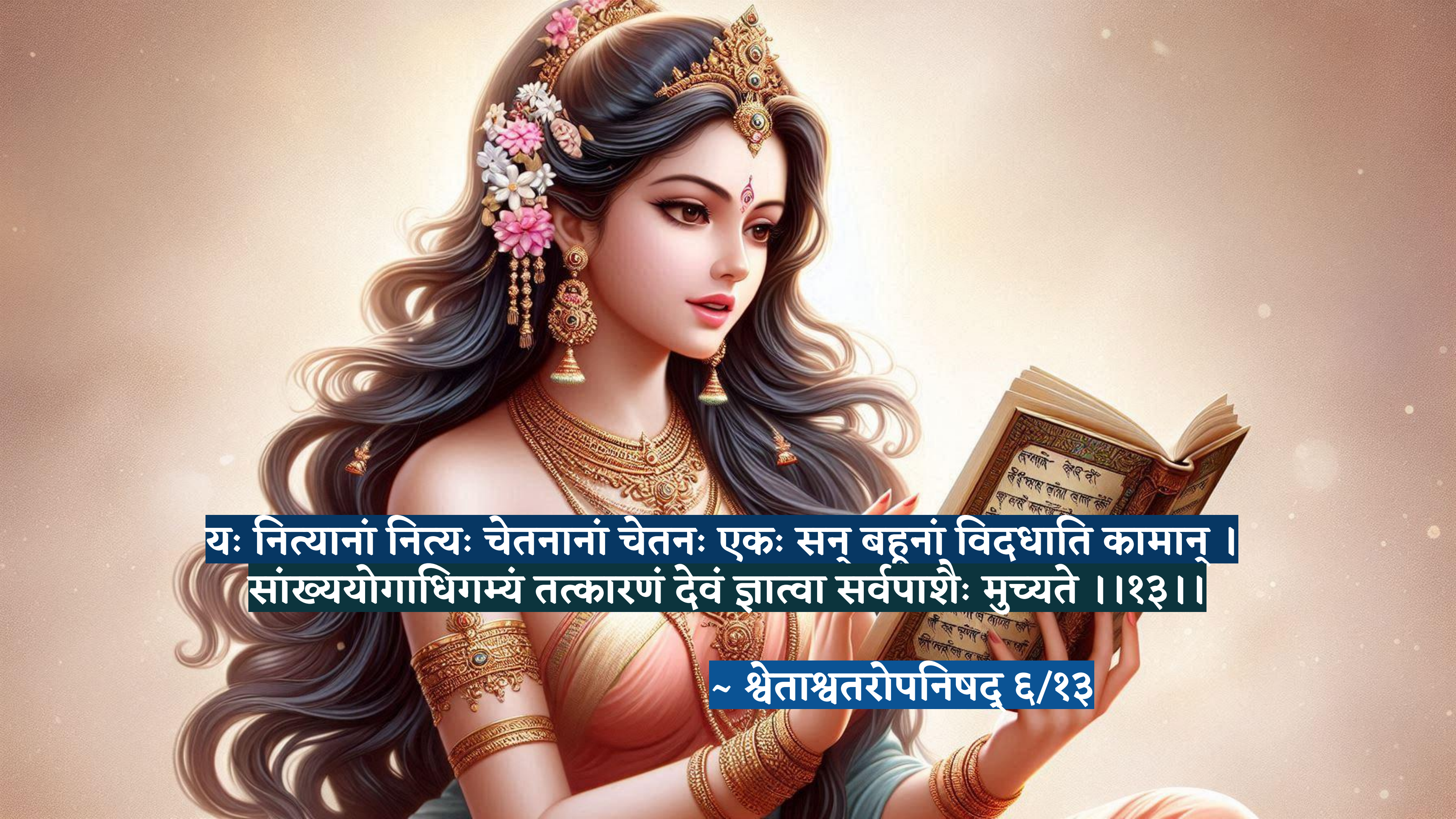
१. पूर्वपक्ष का दावा निर्मूल है तथा शास्त्र व पूर्वाचार्य भी हमारे ही पक्ष में हैं ।

२. महर्षि याज्ञवल्क्य पर लगने वाले कलंक भी झूठे हैं ; याज्ञवल्क्य जी की बात का आशय समझे बिना ही इन लोगों ने अर्थ का अनर्थ कर दिया ।

३. चाहे वह किसी भी विषय पर शास्त्रार्थ या भ्रम-भंजन होना हो , सत्य का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है ।

४. ऋषियों-मुनियों का अपमान करने वाले लोगों को स्वयं के गिरेबान में झांक कर देख लेना चाहिए ; भला सूर्य के प्रकाश की तुलना भी किसी छोटे जुगनू से हो सकती है ?

५. हम सभी को आध्यात्मिक उन्नति हेतु धर्मग्रंथो का अध्ययन और साथ ही साथ आचरण भी अवश्य करना चाहिए ।



यः नित्यानां नित्यः चेतनानां चेतनः एकः सन् बहूनां विदधाति कामान् ।
सांख्ययोगाधिगम्यं तत्कारणं देवं ज्ञात्वा सर्वपाशैः मुच्यते ।।१३।।
~ श्वेताश्वतरोपनिषद् ६/१३